International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

वैश्वीकरण के दौर में भारतीय पारिवारिक संरचना का रूपांतरण: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

Ms. Supriya Dubey

Reseach Scholar, Hindi Department, Delhi University

शोध-सार
प्रस्तुत शोध पत्र वैश्वीकरण के दौर में भारतीय पारिवारिक संरचना में हो रहे परिवर्तनों का समाजशास्त्रीय दृष्टि से विश्लेषण करता है।इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह है कि आर्थिक उदारीकरण, तकनीकी प्रगति, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सामाजिक गतिशीलता जैसे वैश्वीकरण के विभिन्न आयामों ने भारतीय परिवार की पारंपरिक संरचना, भूमिकाओं और संबंधों को किस प्रकार प्रभावित किया है। शोध में पारंपरिक संयुक्त परिवार प्रणाली से एकल परिवार की ओर बढ़ते रुझान, पारिवारिक संबंधों की बदलती प्रकृति, महिलाओं की भूमिका में आए परिवर्तन, विवाह संस्था में बदलाव तथा पीढ़ीगत अंतर जैसे प्रमुख पहलुओं का विश्लेषण किया गया है।
इस अध्ययन में संरचनात्मक-कार्यात्मक, संघर्ष, नारीवादी और उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोणों के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि किस तरह वैश्वीकरण परिवार को एक स्थिर संस्था से एक लचीली और परिवर्तनीय संरचना में रूपांतरित कर रहा है। जहाँ एक तरफ यह प्रक्रिया व्यक्तिगत स्वतंत्रता, लैंगिक समानता और आर्थिक अवसरों को बढ़ावा देती है, वहीं दूसरी तरफ यह पारिवारिक विघटन, भावनात्मक दूरी, उपभोक्तावाद और सामाजिक असंतुलन जैसी चुनौतियाँ को भी उत्पन्न करती नज़र आने लगी हैं।
अध्ययन यह देखने का प्रयास करेगा कि किस तरह भारतीय परिवार पूर्णतः समाप्त नहीं हुआ है, बल्कि उसने अपनी बदलती परिस्थितियों के अनुरूप स्वयं को पुनर्गठित किया है। और वर्तमान समय में भारतीय परिवार परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास कर रहा है। अतः आवश्यक है कि सामाजिक नीतियों और सांस्कृतिक मूल्यों के माध्यम से इस संतुलन को बनाए रखा जाए, जिससेपरिवार अपनी सामाजिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक भूमिका को प्रभावी ढंग से निभा सके।

बीज शब्द: वैश्वीकरण, भारतीय परिवार, पारिवारिक संरचना, संयुक्त परिवार, एकल परिवार, सामाजिक परिवर्तन, आर्थिक उदारीकरण, सांस्कृतिक आदान-प्रदान, सामाजिक गतिशीलता, लैंगिक समानता, महिला सशक्तिकरण, विवाह संस्था, पीढ़ीगत अंतर, उपभोक्तावाद, व्यक्तिवाद, पारिवारिक संबंध, भावनात्मक दूरी आदि ये सभी शब्द इस अध्ययन के मुख्य विषय-वस्तु और विश्लेषण के केंद्रीय बिंदुओं को संक्षेप में अभिव्यक्त करते हैं।

भूमिका

भारतीय समाज में आरम्भ से परिवार को एक मूलभूत और केंद्रीय सामाजिक संस्था के रूप में स्वीकार किया जाता रहा है। यह एक जैविक संबंधों का समूह नही है , बल्कि एक ऐसी संरचना है जो व्यक्ति के सामाजिकरण , सांस्कृतिक हस्तांतरण, भावनात्मक संतुलन और आर्थिक सहयोग का आधार बनती है। भारतीय संस्कृति में हमेशा से परिवार को 'संस्कारों की पाठशाला' माना गया है, जहाँ व्यक्ति अपने जीवन के प्रारंभिक मूल्य, नैतिकता, आचार-व्यवहार और सामाजिक दायित्वों को सीखता है। इस तरह से परिवार केवल व्यक्ति के निर्माण में सहायक न होकर समाज की स्थिरता

और निरंतरता को भी सुनिश्चित करता है।ऐतिहासिक रूप से देखा जाए तो भारत में संयुक्त परिवार प्रणाली का विशेष महत्व रहा है। इसमें एक ही छत के नीचे कई पीढ़ियाँ जैसे दादा-दादी, माता-पिता, भाई-बहन और अन्य रिश्तेदार साथ रहते हैं और एक साझा आर्थिक एवं सामाजिक इकाई के रूप में कार्य करते हैं। इस व्यवस्था में आपसी सहयोग, त्याग, सामूहिकता और परंपरागत मूल्यों का विशेष स्थान रहा है। लेकिन समय के साथ सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी परिवर्तनों ने इस संरचना को प्रभावित करना शुरू किया।विशेष रूप से 20वीं सदी के उत्तरार्ध और 21वीं सदी के आरंभ में वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने भारतीय समाज में व्यापक परिवर्तन लाए हैं। 1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद भारत वैश्विक अर्थव्यवस्था से तेजी से जुड़ा, जिससे न केवल आर्थिक नीतियों में बदलाव आया, बल्कि सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं जैसे जीवनशैली, मूल्य, संबंध और पारिवारिक संरचना पर भी गहरा प्रभाव पड़ा। वैश्वीकरण ने दूर-दराज के समाजों को आपस में जोड़ते हुए एक ऐसा परिवेश निर्मित किया है, जहाँ स्थानीय जीवन-शैली वैश्विक प्रभावों से लगातार प्रभावित हो रही है।

प्रसिद्ध समाजशास्त्री Anthony Giddens के अनुसार *“वैश्वीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें दूरस्थ स्थानों के बीच संबंध इस प्रकार विकसित होते हैं कि एक स्थान की घटनाएँ दूसरे स्थान के जीवन को प्रभावित करती हैं”*। इस दृष्टि से देखा जाए तो भारतीय परिवार भी अब केवल स्थानीय या पारंपरिक संस्था नहीं रह गया है, बल्कि वह वैश्विक परिवर्तनों से निरंतर प्रभावित होने वाली संस्था बन चूका है!

वैश्वीकरण के प्रभाव से भारतीय पारिवारिक संरचना में अनेको बदलाव देखने को मिलते हैं। संयुक्त परिवारों का विघटन और एकल परिवारों की वृद्धि, पारंपरिक भूमिकाओं में बदलाव, महिलाओं की स्थिति में सुधार, विवाह संस्था में परिवर्तन, तथा पारिवारिक संबंधों में औपचारिकता और व्यक्तिवाद का बढ़ना ये सभी इस परिवर्तन की ओर संकेत करते हैं। जहाँ पहले परिवार सामूहिकता और परंपराओं पर आधारित था, वहीं अब व्यक्ति की स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता और निजी आकांक्षाएँ अधिक महत्वपूर्ण हो गई हैं।इसक साथ साथ तकनीकी क्रांति विशेषकर इंटरनेट और सोशल मीडिया ने भी पारिवारिक संबंधों को प्रभावित किया है। आज परिवार के सदस्य भले ही भौतिक रूप से दूर हों, लेकिन डिजिटल माध्यमों के जरिए एक दूसरे से जुड़े रहते हैं। फिर भी, लेकिन इस वर्चुअल निकटता के बावजूद भावनात्मक दूरी और संवाद की कमी जैसी समस्याएँ उभरकर सामने आई हैं।यहां यह भी बता देना जरुरी है कि वैश्वीकरण का प्रभाव हर जगह समान नहीं है। भारतीय समाज के विभिन्न वर्गों जैसे ग्रामीण और शहरी, उच्च और निम्न वर्ग, शिक्षित और अशिक्षित आदि पर इसका प्रभाव अलग-अलग रूप से दिखाई देता है। जहाँ एक ओर शहरी और शिक्षित वर्ग में पारिवारिक परिवर्तन अधिक तीव्र हैं, वहीं ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक संरचनाएँ अभी भी मजबूत बनी हुई हैं। इस प्रकार, भारतीय परिवार एक संक्रमणकालीन अवस्था से गुजर रहा है, जिसमें परंपरा और आधुनिकता के बीच निरंतर संवाद और संघर्ष चल रहा है।

इस संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य वैश्वीकरण के दौर में पारिवारिक संरचना में आए परिवर्तनों का समाजशास्त्रीय दृष्टि से विश्लेषण करना है। यह अध्ययन न केवल पारिवारिक संरचना के रूपांतरण को समझने का प्रयास करता है, बल्कि यह भी स्पष्ट करता है कि इन परिवर्तनों के पीछे कौन-कौन से सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारक हैं। साथ ही, यह अध्ययन इस बात पर भी प्रकाश डालता है कि इन परिवर्तनों का भारतीय समाज की स्थिरता, संबंधों और सामाजिक मूल्यों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है।

वैश्वीकरण की अवधारणा और परिभाषा

वैश्वीकरण एक जटिल, बहुआयामी और गतिशील प्रक्रिया है, जिसने सम्पूर्ण विश्व को एक ग्राम में तब्दील कर दिया है!जहां विश्व के किसी एक कोने में होने वाला विचार विमर्श क्षेत्रीय न रहकर वैश्विक स्तर पर चर्चा का विषय बन जाता है क्योंकि सभी के हित आपस में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े हुए हैं सरल शब्दों में, वैश्वीकरण का अर्थ है—**“दुनिया**

का एक-दूसरे के करीब आना" या कहें की किसी वस्तु,विचार,पूंजी अथवा सेवाओं का वैश्विक स्तर पर रूपन्तरण हो जाना,इसमें भौगोलिक सीमाओं का महत्व कम होता जाता है और विचारों, वस्तुओं, सेवाओं, पूंजी तथा लोगों का आदान-प्रदान तेजी से बढ़ता है।आधुनिक विश्व के सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिदृश्य में यदि किसी एक प्रक्रिया ने सबसे व्यापक और गहरा प्रभाव डाला है, तो वह है वैश्वीकरण। यह केवल एक आर्थिक नीति या अंतरराष्ट्रीय व्यापार की व्यवस्था नहीं है, बल्कि एक ऐसी व्यापक परिवर्तनकारी प्रक्रिया है, जिसने मानव जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया है। वैश्वीकरण के माध्यम से आज विश्व के विभिन्न देश, समाज और संस्कृतियाँ पहले की तुलना में कहीं अधिक निकट और परस्पर जुड़ी हुई दिखाई देती हैं।

इतिहास की दृष्टि से देखा जाए तो विभिन्न सभ्यताओं के बीच संपर्क और आदान-प्रदान कोई नई बात नहीं है। प्राचीन काल में भी व्यापार, सांस्कृतिक संपर्क और प्रवास के माध्यम से समाज एक-दूसरे से जुड़े रहे हैं। किंतु वर्तमान समय में वैश्वीकरण की जो तीव्रता और व्यापकता देखने को मिलती है, वह अभूतपूर्व है। विशेष रूप से 20वीं सदी के उत्तरार्ध और 21वीं सदी में तकनीकी क्रांति, संचार माध्यमों के विकास तथा आर्थिक उदारीकरण की नीतियों ने इस प्रक्रिया को अत्यंत तीव्र गति प्रदान की है।भारतीय संदर्भ में वैश्वीकरण का प्रभाव विशेष रूप से 1991 के आर्थिक सुधारों के बाद अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण की नीतियों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व बाजार से जोड़ दिया। इसके परिणामस्वरूप न केवल आर्थिक क्षेत्र में परिवर्तन हुआ, बल्कि सामाजिक संरचनाओं, जीवनशैली, सांस्कृतिक मान्यताओं और पारंपरिक संस्थाओं पर भी इसका गहरा प्रभाव पड़ा। भारतीय समाज, जो लंबे समय तक अपनी परंपराओं, रीति-रिवाजों और सांस्कृतिक मूल्यों से जुड़ा रहा, अब वैश्विक प्रभावों के साथ एक नए प्रकार के संतुलन की ओर बढ़ रहा है।

समाजशास्त्रियों ने वैश्वीकरण को विभिन्न दृष्टिकोणों से परिभाषित किया है:

- Anthony Giddens के अनुसार, *"वैश्वीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें दूर-दराज के क्षेत्रों के बीच सामाजिक संबंध इस प्रकार विकसित होते हैं कि एक स्थान की घटनाएँ दूसरे स्थान को प्रभावित करती हैं।"*
- Roland Robertson के अनुसार, *"वैश्वीकरण विश्व को एक 'वैश्विक गाँव' में बदलने की प्रक्रिया है।"*
- Ulrich Beck के अनुसार, *"यह विश्व समाज के निर्माण की प्रक्रिया है, जहाँ राष्ट्रीय सीमाएँ कमजोर पड़ जाती हैं।"*

इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि वैश्वीकरण केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक संबंधों का भी पुनर्गठन है।

भारतीय पारिवारिक संरचना का पारंपरिक परिप्रेक्ष्य

भारतीय समाज में पारिवारिक संरचना केवल साथ रहने की व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संगठन, सांस्कृतिक निरंतरता और मानवीय संबंधों की आधारशिला है। पारंपरिक भारतीय परिवार सामूहिकता, पारस्परिक सहयोग, नैतिक मूल्यों और परंपराओं पर आधारित रहा है। इस दृष्टि से भारतीय परिवार को समझने के लिए इसके विभिन्न आयामों जैसे इसकी संरचना, संबंध, मूल्य, कार्य और नियंत्रण आदि का अध्ययन आवश्यक है।

संयुक्त परिवार प्रणाली

भारतीय पारंपरिक पारिवारिक संरचना का सबसे प्रमुख स्वरूप संयुक्त परिवार रहा है। संयुक्त परिवार में एक ही छत के नीचे कई पीढ़ियाँ जैसे दादा-दादी, माता-पिता, चाचा-चाची, भाई-बहन और उनके बच्चे साथ रहते हैं। यह केवल निवास की व्यवस्था नहीं, बल्कि एक आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक इकाई भी होती है। इसमें आय और संसाधनों का आपस में मिल जुल कर उपयोग किया जाता है तथा सभी सदस्य एक-दूसरे के प्रति उत्तरदायी होते हैं।इसमें 'साझा रसोई' की अवधारणा विशेष रूप से महत्वपूर्ण होती है, जो सामूहिकता और एकता का प्रतीक है। इस व्यवस्था में व्यक्तिगत इच्छाओं की अपेक्षा सामूहिक हित को अधिक महत्व दिया जाता है। परिवार का मुखिया निर्णय लेने की

प्रमुख भूमिका निभाता है और उसके निर्णयों का पालन सभी सदस्य करते हैं।समाजशास्त्री M. N. Srinivas ने भारतीय संयुक्त परिवार को सामाजिक स्थिरता और सांस्कृतिक निरंतरता का महत्वपूर्ण आधार माना है, क्योंकि यह परंपराओं और मूल्यों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक स्थानांतरित करता है।

पितृसत्तात्मक संरचना

पारंपरिक भारतीय परिवार मुख्यतः पितृसत्तात्मक रहा है, जहाँ परिवार की सत्ता और नियंत्रण पुरुषों विशेषकर पिता या सबसे बड़े पुरुष सदस्य के हाथ में होता है। इस संरचना में वंश, संपत्ति और सामाजिक पहचान का निर्धारण पिता के माध्यम से होता है। और महिलाओं की भूमिका मुख्यतः घरेलू कार्यों तक सीमित रही है, जैसे बच्चों का पालन-पोषण, भोजन बनाना और परिवार की देखभाल करना। यद्यपि वे परिवार के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, फिर भी निर्णय लेने की प्रक्रिया में उनकी भागीदारी सीमित होती है।यह संरचना सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने में सहायक रही, लेकिन साथ ही यह लैंगिक असमानता को भी बढ़ावा देती रही है। आधुनिक समय में इस पितृसत्तात्मक व्यवस्था को चुनौती मिल रही है, लेकिन पारंपरिक संदर्भ में यह भारतीय परिवार की एक प्रमुख विशेषता रही है।

सामाजिकरण का केंद्र

परिवार व्यक्ति के सामाजिकरण का पहला और सबसे महत्वपूर्ण माध्यम होता है। जन्म के बाद बच्चा सबसे पहले परिवार के संपर्क में आता है और यहीं से वह भाषा, व्यवहार, संस्कार, मूल्य और सामाजिक नियम सीखता है।भारतीय परिवार में बच्चों को नैतिकता, अनुशासन, बड़ों का सम्मान, सहयोग और सामूहिकता जैसे मूल्यों की शिक्षा दी जाती है। यह प्रक्रिया औपचारिक नहीं होती, बल्कि दैनिक जीवन के अनुभवों, परंपराओं और रीति-रिवाजों के माध्यम से स्वाभाविक रूप से होती है।समाजशास्त्री Talcott Parsons के अनुसार, परिवार समाजीकरण की एक अनिवार्य संस्था है, जो व्यक्ति को समाज के अनुरूप ढालती है और सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने में मदद करती है।

आर्थिक सहयोग और सुरक्षा

परिवार आर्थिक इकाई के रूप में भी कार्य करता है। विशेष रूप से संयुक्त परिवार में जहाँ सभी सदस्य अपनी आय को एक साझा कोष में जोड़ते हैं और आवश्यकताओं के अनुसार उसका उपयोग करते हैं। इससे आर्थिक सुरक्षा और स्थिरता बनी रहती है।इस व्यवस्था में बेरोजगारी, बीमारी या अन्य संकट की स्थिति में परिवार के सदस्य एक-दूसरे का सहारा बनते हैं। कृषि आधारित समाज में यह व्यवस्था विशेष रूप से उपयोगी रही है, जहाँ सभी सदस्य मिलकर काम करते हैं और उत्पादन में योगदान देते हैं।

सांस्कृतिक परंपराओं का संरक्षण

भारतीय परिवार सांस्कृतिक मूल्यों, परंपराओं और रीति-रिवाजों के संरक्षण का प्रमुख माध्यम रहा है। त्योहारों, धार्मिक अनुष्ठानों, विवाह संस्कारों और पारिवारिक परंपराओं के माध्यम से संस्कृति का हस्तांतरण पीढ़ी दर पीढ़ी होता है।संयुक्त परिवार में बुजुर्गों की उपस्थिति इस प्रक्रिया को और मजबूत बनाती है, क्योंकि वे परंपराओं और अनुभवों के वाहक होते हैं। बच्चे उनसे कहानियाँ, धार्मिक मान्यताएँ और सांस्कृतिक व्यवहार सीखते हैं। इसतरहसे , परिवार एक 'सांस्कृतिक विद्यालय' के रूप में कार्य करता है, जो समाज की पहचान और गतिशीलता को बनाए रखता है।

भावनात्मक समर्थन और सामाजिक सुरक्षा

पारंपरिक भारतीय परिवार अपने सदस्यों को भावनात्मक सुरक्षा और मानसिक संतुलन प्रदान करता है। संयुक्त परिवार में अनेक सदस्य होने के कारण व्यक्ति अकेलापन महसूस नहीं करता और उसे हर स्थिति में सहयोग मिलता

है।खुशी, दुःख, संकट या किसी भी परिस्थिति में परिवार एक सहारा बनकर खड़ा रहता है। यह भावनात्मक जुड़ाव व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक संतुलन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।और आधुनिक समाज में जहाँ व्यक्तिवाद बढ़ रहा है, वहाँ इस प्रकार की भावनात्मक सुरक्षा धीरे-धीरे कम होती जा रही है!

सामाजिक नियंत्रण

पारंपरिक भारतीय परिवार सामाजिक नियंत्रण का भी एक प्रभावी माध्यम रहा है। परिवार के नियम, परंपराएँ और नैतिक मान्यताएँ व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित करती हैं।बुजुर्गों का मार्गदर्शन और अनुशासन सामाजिक मर्यादाओं को बनाए रखने में सहायक होता है। यदि कोई सदस्य सामाजिक नियमों का उल्लंघन करता है, तो उसे परिवार के भीतर ही समझाया या नियंत्रित किया जाता है।

सैद्धांतिक दृष्टि में वैश्वीकरण और परिवार का सम्बन्ध

वैश्वीकरण और परिवार के संबंध को समझने के लिए केवल अनुभवजन्य तथ्यों का विश्लेषण पर्याप्त नहीं है, बल्कि इसके पीछे कार्य कर रहे समाजशास्त्रीय सिद्धांतों को भी समझना आवश्यक है। विभिन्न समाजशास्त्रियों ने अपने-अपने दृष्टिकोण से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया है कि वैश्वीकरण के प्रभाव से पारिवारिक संरचना, भूमिकाएँ और संबंध किस प्रकार परिवर्तित हो रहे हैं। इन सैद्धांतिक दृष्टिकोणों के माध्यम से हम यह समझ सकते हैं कि परिवार में हो रहे परिवर्तन केवल सतही नहीं हैं, बल्कि वे व्यापक सामाजिक-आर्थिक प्रक्रियाओं से जुड़े हुए हैं।

संरचनात्मक-कार्यात्मक दृष्टिकोण :संरचनात्मक-कार्यात्मक दृष्टिकोण के अनुसार, समाज एक व्यवस्थित तंत्र है, जिसमें विभिन्न संस्थाएँ जैसे परिवार, शिक्षा, धर्म और अर्थव्यवस्था विशिष्ट कार्य करती हैं। इस दृष्टिकोण के प्रमुख प्रवर्तक Talcott Parsons के अनुसार, परिवार समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण संस्था है, जो दो प्रमुख कार्य करती है—(1) बच्चों का समाजीकरण और (2) वयस्कों को भावनात्मक स्थिरता प्रदान करना।पारंपरिक समाज में परिवार एक बहु-कार्यात्मक संस्था था, जो आर्थिक उत्पादन, शिक्षा, सुरक्षा और सामाजिक नियंत्रण जैसे कई कार्यों को निभाता था। किंतु वैश्वीकरण और औद्योगीकरण के प्रभाव से इन कार्यों का विभाजन अन्य संस्थाओं में होने लगा। उदाहरण के लिए, शिक्षा का कार्य विद्यालयों ने संभाल लिया, और आर्थिक उत्पादन का कार्य उद्योगों में स्थानांतरित हो गया, आज का परिवार मुख्यतः भावनात्मक समर्थन और समाजीकरण तक सीमित होता जा रहा है। इस दृष्टिकोण से देखा जाए तो वैश्वीकरण परिवार को समाप्त नहीं करता, बल्कि उसके कार्यों और संरचना को बदलता है ताकि वह आधुनिक समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप ढल सके।

संघर्ष सिद्धांत:संघर्ष सिद्धांत, जिसका आधार Karl Marx के विचारों पर आधारित है, यह मानता है कि समाज में विभिन्न वर्गों के बीच असमानता और संघर्ष विद्यमान रहते हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार, वैश्वीकरण पूंजीवादी व्यवस्था को मजबूत करता है, जिससे आर्थिक असमानता और सामाजिक विभाजन बढ़ते हैं, और इसका सीधा प्रभाव परिवार पर पड़ता है।वैश्वीकरण के कारण परिवार के भीतर भी शक्ति और संसाधनों के वितरण में असमानता उत्पन्न होती है। उदाहरण के लिए, जब एक व्यक्ति (अधिकतर पुरुष या उच्च आय वाला सदस्य) परिवार में अधिक आर्थिक शक्ति प्राप्त कर लेता है, तो वह निर्णय लेने में प्रमुख भूमिका निभाता है। इससे पारिवारिक संबंधों में तनाव और संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण :उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण के अनुसार, आधुनिक समाज में पारंपरिक संरचनाएँ और स्थिरता कमजोर हो रही हैं इस दृष्टिकोण के प्रमुख विचारक Zygmunt Bauman ने आधुनिक संबंधों को "तरल आधुनिकता" की संज्ञा दी है।इस दृष्टिकोण के अनुसार, वैश्वीकरण ने परिवार को एक स्थिर संस्था से एक लचीली और परिवर्तनीय संरचना में बदल दिया है। आज परिवार के कई नए रूप देखने को मिलते हैं जैसे एकल परिवार, एकल

अभिभावक परिवार, समलैंगिक परिवार, लिव-इन संबंध, और बाल-रहित परिवार।उत्तर-आधुनिक दृष्टिकोण यह भी बताता है कि अब रिश्ते परंपरा या सामाजिक दबाव के कारण नहीं, बल्कि व्यक्तिगत पसंद और संतुष्टि के आधार पर बनाए और समाप्त किए जाते हैं। इस कारण संबंधों में स्थायित्व कम हो गया है और अस्थिरता बढ़ गई है।

नारीवादी दृष्टिकोण :नारीवादी दृष्टिकोण परिवार को एक ऐसी संस्था के रूप में देखता है, जहाँ लैंगिक असमानताएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार, परिवार में महिलाओं की भूमिका सीमित और अधीनस्थ रही है, जबकि पुरुषों को अधिक अधिकार और स्वतंत्रता प्राप्त रही है।वैश्वीकरण के प्रभाव से महिलाओं को शिक्षा, रोजगार और आर्थिक स्वतंत्रता के अधिक अवसर प्राप्त हुए हैं। इससे उनकी सामाजिक स्थिति में सुधार हुआ है और वे परिवार के निर्णयों में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने लगी हैं।हालाँकि, नारीवादी विचारक यह भी बताते हैं कि वैश्वीकरण ने महिलाओं के लिए नए प्रकार की चुनौतियाँ भी उत्पन्न की हैं जैसे दोहरी जिम्मेदारी (घर और काम), कार्यस्थल पर असमानता, और सांस्कृतिक दबाव। इस प्रकार, वैश्वीकरण महिलाओं के लिए अवसर और चुनौतियाँ दोनों लेकर आया है, जिसका प्रभाव पारिवारिक संरचना और संबंधों पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

वैश्वीकरण के प्रभाव से भारतीय परिवार में परिवर्तन

संयुक्त से एकल परिवार :वैश्वीकरण और आर्थिक परिवर्तनों के कारण भारतीय समाज में संयुक्त परिवार प्रणाली का धीरे-धीरे विघटन हुआ है और एकल परिवारों की संख्या बढ़ी है। रोजगार, शिक्षा और बेहतर जीवन-शैली की खोज में लोग गाँवों से शहरों तथा एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवास करने लगे हैं, जिससे बड़े परिवारों का साथ रहना कठिन हो गया है। परिणामस्वरूप पति-पत्नी और बच्चों तक सीमित परिवार अधिक प्रचलित हो गए हैं। M. N. Srinivas के अनुसार, यह परिवर्तन सामाजिक गतिशीलता और आधुनिकता से जुड़ा हुआ है, जिसमें पारंपरिक सामूहिकता की जगह व्यक्तिगत स्वतंत्रता को महत्व मिलने लगता है।

पारिवारिक संबंधों में परिवर्तन:वैश्वीकरण के प्रभाव से पारिवारिक संबंधों की प्रकृति में भी बदलाव आया है। पहले जहाँ संबंध कर्तव्य और परंपरा पर आधारित होते थे, वहीं अब वे संवाद, समझ और व्यक्तिगत संतुष्टि पर आधारित होते जा रहे हैं। बुजुर्गों का निर्णयात्मक अधिकार कम हुआ है और युवा पीढ़ी अपने निर्णय स्वयं लेने लगी है। इस परिवर्तन के कारण परिवार में समानता और लोकतांत्रिक वातावरण तो बढ़ा है, लेकिन कभी-कभी संबंधों में औपचारिकता और दूरी भी देखी जाती है।

महिलाओं की भूमिका में परिवर्तन:वैश्वीकरण ने महिलाओं की स्थिति में महत्वपूर्ण बदलाव लाया है। शिक्षा और रोजगार के अवसरों के बढ़ने से महिलाएँ आर्थिक रूप से स्वतंत्र हुई हैं और परिवार के निर्णयों में उनकी भागीदारी बढ़ी है। अब वे केवल घरेलू कार्यों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि कार्यक्षेत्र में भी सक्रिय भूमिका निभा रही हैं। अन्थोनी गिडेन्स के अनुसार, आधुनिक समाज में लैंगिक भूमिकाएँ पुनर्गठित हो रही हैं, जिससे परिवार में समानता की भावना विकसित हो रही है। हालांकि, इससे महिलाओं पर "दोहरी जिम्मेदारी" घर और नौकरी का दबाव भी बढ़ा है।

विवाह संस्था में परिवर्तन:वैश्वीकरण के प्रभाव से विवाह की परंपरागत धारणा में भी परिवर्तन आया है। अब विवाह केवल सामाजिक संस्था नहीं, बल्कि व्यक्तिगत पसंद और भावनात्मक संतुष्टि का विषय बन गया है। प्रेम विवाह, अंतर्जातीय विवाह और देर से विवाह करने की प्रवृत्ति बढ़ी है। इसके साथ ही तलाक की दर में भी वृद्धि देखी जा रही है, क्योंकि व्यक्ति अब असंतोषजनक संबंधों में बने रहने के लिए बाध्य नहीं है। यह परिवर्तन के बढ़ते प्रभाव को दर्शाता है।

उपभोक्तावाद और परिवार:वैश्वीकरण के साथ उपभोक्तावाद का प्रभाव तेजी से बढ़ा है, जिसने पारिवारिक जीवन को भी प्रभावित किया है। अब परिवार की पहचान उसके मूल्यों से अधिक उसकी आर्थिक स्थिति और उपभोग क्षमता से जुड़ने लगी है। ब्रांडेड वस्तुओं, आधुनिक जीवनशैली और भौतिक सुख-सुविधाओं की चाह ने पारिवारिक

प्राथमिकताओं को बदल दिया है। इससे आर्थिक दबाव और प्रतिस्पर्धा बढ़ी है, जिससे कभी-कभी पारिवारिक तनाव भी उत्पन्न होता है।

पीढ़ीगत अंतर :वैश्वीकरण के कारण नई और पुरानी पीढ़ी के बीच सोच, मूल्यों और जीवनशैली में स्पष्ट अंतर उत्पन्न हुआ है। युवा पीढ़ी आधुनिक, स्वतंत्र और तकनीक-प्रेमी है, जबकि बुजुर्ग पारंपरिक मूल्यों को अधिक महत्व देते हैं। इस अंतर के कारण कई बार परिवार में मतभेद और संवादहीनता की स्थिति उत्पन्न हो जाती है। हालांकि, यह परिवर्तन समाज में नए विचारों और दृष्टिकोणों को भी जन्म देता है।

बुजुर्गों की स्थिति में परिवर्तन:संयुक्त परिवारों के विघटन के कारण बुजुर्गों की स्थिति में भी परिवर्तन आया है। पहले जहाँ वे परिवार के केंद्र में होते थे और उनके अनुभव का सम्मान किया जाता था, वहीं अब कई मामलों में वे उपेक्षित या अकेले रह जाते हैं। वृद्धाश्रमों की संख्या में वृद्धि इस बदलाव का एक संकेत है। इससे सामाजिक और भावनात्मक सुरक्षा की समस्या उत्पन्न होती है, जो आधुनिक परिवार के सामने एक गंभीर चुनौती है।

तकनीक और डिजिटल प्रभाव:तकनीकी विकास जैसे इंटरनेट, मोबाइल और सोशल मीडिया ने पारिवारिक जीवन को गहराई से प्रभावित किया है। एक ओर यह दूर रह रहे सदस्यों को जोड़ने में सहायक है, वहीं दूसरी ओर परिवार के भीतर प्रत्यक्ष संवाद को कम भी कर रहा है। अब लोग एक ही घर में रहते हुए भी डिजिटल माध्यमों में अधिक व्यस्त रहते हैं, जिससे भावनात्मक जुड़ाव कमजोर पड़ सकता है। इस प्रकार, तकनीक परिवार को जोड़ने और दूर करने—दोनों भूमिकाएँ निभा रही है।

वैश्वीकरण का भारतीय परिवार पर सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव

वैश्वीकरण ने भारतीय परिवार पर सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के प्रभाव डाले हैं, जो एक साथ अवसर और चुनौतियाँ प्रस्तुत करते हैं। सकारात्मक रूप से, इस प्रक्रिया ने शिक्षा, रोजगार और आर्थिक अवसरों का विस्तार किया है, जिससे परिवार के सदस्यों विशेषकर महिलाओं को अधिक स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता और निर्णय लेने की क्षमता मिली है; साथ ही पारिवारिक संबंधों में समानता और लचीलापन भी बढ़ा है। इसके अतिरिक्त, तकनीकी विकास ने दूर रहने वाले सदस्यों को भी जुड़े रहने की सुविधा प्रदान की है। वहीं नकारात्मक पक्ष में, वैश्वीकरण के कारण संयुक्त परिवारों का विघटन, एकल परिवारों की वृद्धि, उपभोक्तावाद का दबाव, और पारिवारिक संबंधों में भावनात्मक दूरी जैसी समस्याएँ उभरकर सामने आई हैं। बुजुर्गों की उपेक्षा, पीढ़ीगत अंतर और विवाह संस्था में अस्थिरता भी इसके प्रमुख परिणाम हैं। इस प्रकार, वैश्वीकरण ने भारतीय परिवार को एक ओर आधुनिक और गतिशील बनाया है, तो दूसरी ओर उसे नई सामाजिक और भावनात्मक चुनौतियों के सामने भी खड़ा कर दिया है।

निष्कर्ष

समग्र रूप से देखा जाए तो वैश्वीकरण ने भारतीय पारिवारिक संरचना को गहराई से प्रभावित करते हुए उसे एक नए रूप में परिवर्तित किया है। पारंपरिक संयुक्त परिवार, जो कभी भारतीय समाज की पहचान हुआ करता था, अब धीरे-धीरे सीमित होता जा रहा है और उसकी जगह अधिक स्वतंत्र, लचीले और छोटे आकार के परिवार ले रहे हैं। इस परिवर्तन के साथ पारिवारिक संबंधों की प्रकृति, भूमिकाओं का निर्धारण, तथा मूल्य-व्यवस्था में भी उल्लेखनीय बदलाव देखने को मिलते हैं।वैश्वीकरण ने जहाँ एक ओर व्यक्तिगत स्वतंत्रता, लैंगिक समानता, शिक्षा और आर्थिक अवसरों का विस्तार किया है, वहीं दूसरी ओर इसने पारिवारिक एकता, सामूहिकता और भावनात्मक जुड़ाव को भी चुनौती दी है। उपभोक्तावाद, व्यक्तिवाद और प्रतिस्पर्धा के बढ़ते प्रभाव ने पारिवारिक जीवन को अधिक जटिल बना दिया है, जिससे संबंधों में औपचारिकता और दूरी की स्थिति उत्पन्न हो रही है।

इसके बावजूद यह कहना उचित होगा कि भारतीय परिवार पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है, बल्कि उसने समय के साथ स्वयं को परिवर्तित और अनुकूलित किया है। आज भी परिवार व्यक्ति के जीवन में सुरक्षा, समर्थन और पहचान का प्रमुख स्रोत बना हुआ है। परंपरा और आधुनिकता के बीच एक संतुलन स्थापित करते हुए भारतीय परिवार निरंतर परिवर्तनशील अवस्था में आगे बढ़ रहा है।अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण ने भारतीय परिवार को एक नई दिशा प्रदान की है, जहाँ परिवर्तन अनिवार्य है, किंतु मूल सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य अभी भी उसकी आधारशिला बने हुए हैं। भविष्य में यह आवश्यक होगा कि इन परिवर्तनों के बीच संतुलन बनाए रखा जाए, ताकि परिवार न केवल आधुनिक आवश्यकताओं को पूरा कर सके, बल्कि अपनी सांस्कृतिक और मानवीय मूल्यों की गरिमा को भी बनाए रखे।

संदर्भ सूची (References

1. Indian Society Srinivas, M. N. (2005). *Indian Society*. New Delhi: Oxford University Press.
2. The Family in India Kapadia, K. M. (1966). *The Family in India*. Bombay: Popular Prakashan.
3. Family, Kinship and Marriage in India Uberoi, P. (2006). *Family, Kinship and Marriage in India*. New Delhi: Oxford University Press.
4. Social Change in Modern India Srinivas, M. N. (1966). *Social Change in Modern India*. Berkeley: University of California Press.
5. The Social System Parsons, T. (1951). *The Social System*. New York: Free Press.
6. The Social System Parsons, T. (1951). *The Social System*. New York: Free Press.
7. The Communist Manifesto Marx, K., & Engels, F. (1848). *The Communist Manifesto*. London.
8. Liquid Modernity Bauman, Z. (2000). *Liquid Modernity*. Cambridge: Polity Press.
9. The Modern World-System Wallerstein, I. (1974). *The Modern World-System*. New York: Academic प्रेस
10. The Transformation of Intimacy Giddens, A. (1992). *The Transformation of Intimacy: Sexuality, Love and Eroticism in Modern Societies*. Cambridge: Polity Press.
11. Runaway World Giddens, A. (2000). *Runaway World: How Globalization is Reshaping Our Lives*. London: रूटलेज
12. Family, Kinship and Marriage in India Uberoi, P. (2006). *Family, Kinship and Marriage in India*. New Delhi: Oxford University Press.
13. Feminism and Family Stacey, J. (1990). *Brave New Families*. New York: Basic Books.
14. The Second Shift Hochschild, A. R. (1989). *The Second Shift*. New York: Viking.

(Research Papers / Journals)

1. International Journal of Creative Research Thoughts Kumar, Naresh. (2018). *भारतीय परिप्रेक्ष्य में वैश्वीकरण का सामाजिक प्रभाव*. IJCRT, 6(1), 359–369.
2. Economic and Political Weekly Shah, A. M. (1998). *The Family in India: Critical Essays*. Economic and Political Weekly.

Web सोर्सेस

1. NCERT
   NCERT. (2020). *Indian Society (Sociology Textbook)* https://ncert.nic.इन
2. IGNOU
   IGNOU Study Material. https://egyankosh.ac.इन

3. Google Scholar https://scholar.google.कॉम

हिंदी संदर्भ पुस्तकें

1. Ahuja, R. (2014). *भारतीय समाज.* जयपुर: रावत पब्लिकेशन
2. Singh, Y. (2000). *भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन.* नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन।
3. Dube, S. C. (1990). *भारतीय समाज.* नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।